भक्त नामावली

हमसौं इन साधुन सौं पंगति।
जिनकौ नाम लेत दुख छूटत, सुख लूटत तिन संगति ॥ 1 ॥

मुख्य महन्त काम रति गणपति, अज महेश नारायण।
सुर नर असुर मुनी पक्षी पशु, जे हरिभक्ति परायण ॥ 2 ॥

वाल्मीकि नारद अगस्त्य शुक, व्यास सूत कुलहीना ।
शबरी स्वपच वसिष्ठ विदुर, विदुरानी प्रेम प्रवीना ॥ 3 ॥

गोपी गोप द्रोपदी कुंती, आदि पांडवा ऊधौ ।
विष्णु स्वामी निम्बारक माधौ, रामानुज मग सूधौ ॥ 4 ॥

लालाचारज धनुर्दास, कूरेश भाव रस भीजे ।
ज्ञानदेव गुरु शिष्य त्रिलोचन, पटतर को कहि दीजे ॥ 5 ॥

पदमावती चरन को चारन, कवि जयदेव जसीलौ ।
चिन्तामणि चिद रूप लखायो, विल्वमंगलहि रसीलौ ॥ 6 ॥

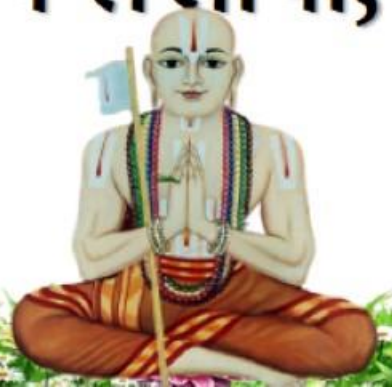

केशवभट्ट श्रीभट्ट नारायन,भट्ट गदाधरभट्टा ।
विट्ठलनाथ वल्लभाचारज, ब्रज के गूजर-जट्टा ॥ 7 ॥

नित्यानन्द अद्वैत महाप्रभु, शची सुवन चैतन्या ।
भट्टगोपाल रघुनाथ जीव अरु, मधु गुसाँईं धन्या ॥ 8 ॥

रूप सनातन भज वृन्दावन, तजि दारा सुत सम्पति ।
व्यासदास हरिवंश गुसाईं, दिन दुलराई दम्पति ॥ 9 ॥

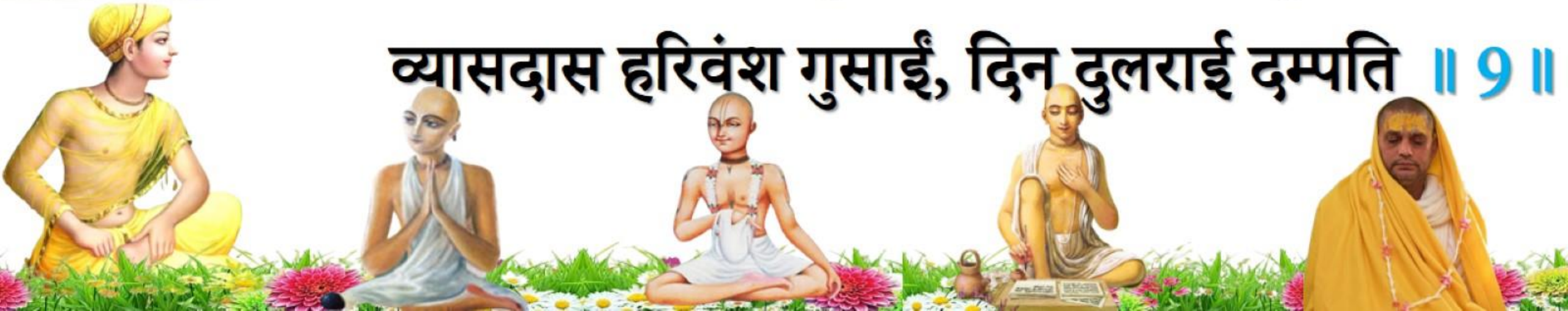

श्रीस्वामी हरिदास हमारे, विपुल बिहारिनि दासी ।
नागरि नवल माधुरी वल्लभ, नित्य बिहार उपासी ॥ 10 ॥

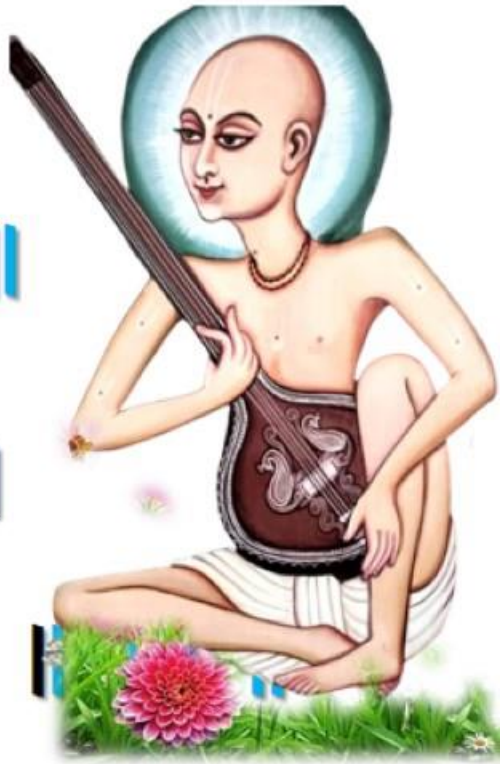

तानसेन अकबर करमैती, मीरा करमाबाई ।
रत्नावती मीर माधौ, रसखान रीति रस गाई ॥

अग्रदास नाभादि सखी ये, सबै राम सीता की ।
सूर मदनमोहन नरसी अलि, तस्कर नवनीता की ॥ 12 ॥

माधौ दास गुसाईं तुलसी, कृष्णदास परमानन्द ।
विष्णुपुरी श्रीधर मधुसूदन, पीपा गुरु रामानंद ॥ 13 ॥

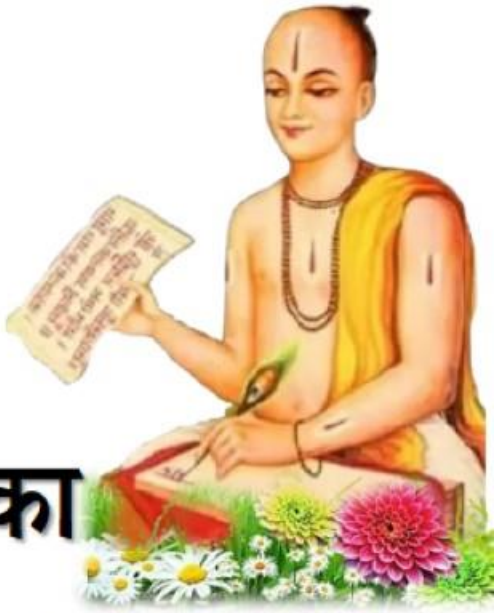

अलि भगवान मुरारी रसिक, स्यामानन्द रंका बंका
रामदास चीधर निष्किंचन, सम्हन भक्त निसंका ॥ 14 ॥

लाखा अंगद भक्त महाजन, गोविन्द नन्द प्रबोधा ।
दासमुरारि प्रेमनिधि विट्ठलदास , मथुरिया योधा ॥ 15 ॥

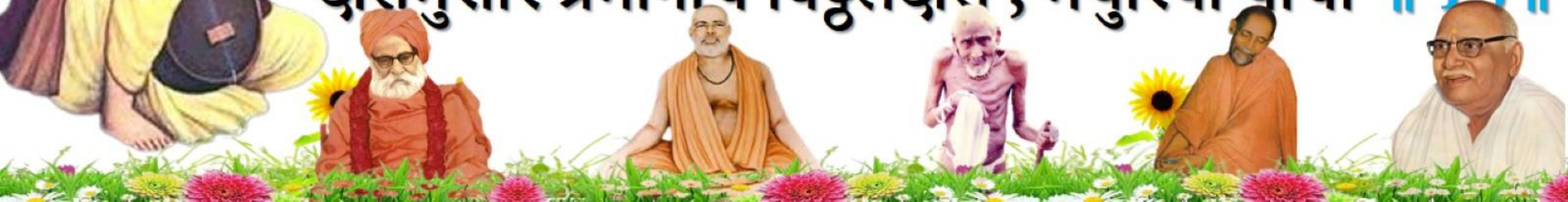

लालमती सीता प्रभुता, झाली गोपाली बाई।
सुत विष दियौ पूजि सिलपिल्ले, भक्ति रसीली पाई ॥ 16 ॥

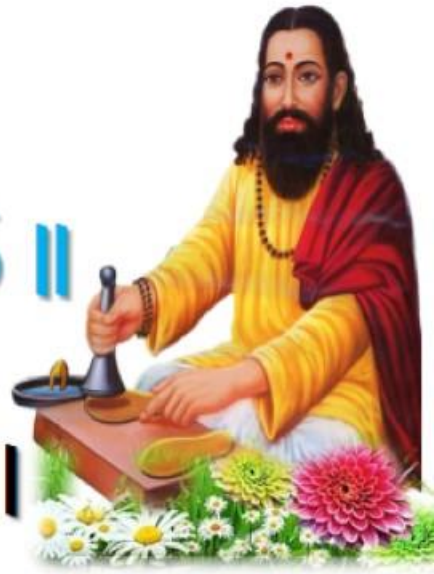

पृथ्वीराज खेमाल चतुर्भुज, राम रसिक रस रासा।
आसकरण मधुकर जयमल नृप, हरिदास जन दासा ॥ 17 ॥

सेना धना कबीरा नामा, कूबा सदन कसाई ।
बारमुखी रैदास सभा में, सही न स्याम हँसाई ॥ 18 ॥

चित्रकेतु प्रह्लाद विभीषण, बलि गृह बाजे बावन।
जामवंत हनुमन्त गीध गुह, किये राम जे पावन ॥ 19 ॥

प्रीति प्रतीति प्रसाद साधु सों, इन्हें इष्ट गुरु जानो
तजि ऐश्वर्य मरजाद वेद की, इनके हाथ बिकानो ॥ 20 ॥

भूत भविष्य लोक चौदह में, भये होय हरि प्यारे ।
तिन तिन सों व्यवहार हमारौ, अभिमानिन ते न्यारे ॥ 21 ॥

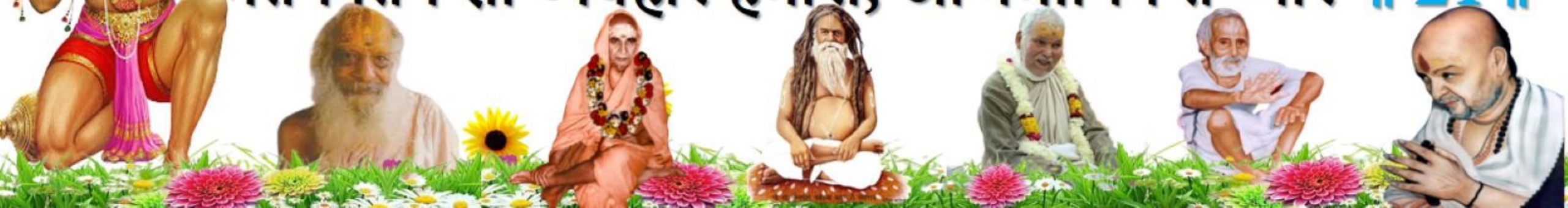

‘भगवतरसिक’ रसिक परिकर करि, सादर भोजन पावै ।
ऊँचो कुल आचार अनादर , देखि ध्यान नहीँ आवै ॥2
हमसौं इन साधुन सों पंगति.........